॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्यसमाज स्वयं कोई धर्म अथवा जाति नहीं है। यह तो सत्य सनातन वैदिक धर्म का ध्वजवाहक है। यह वेदों को आदिज्ञान और अपौरूषेय मानता है।

वर्ष ३२, अंक ८ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार १९ जनवरी, २००९ से २५ जनवरी, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६५ दयानन्दाब्द : १८५

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का १२५वां निर्वाण वर्ष

महर्षि निर्वाण एवं हमारा कर्त्तव्य

– कैप्टन देवरत्न आर्य, एम.कॉम, साहित्य रत्न

गतांक से आगे :–

महर्षि दयानन्द ने मनुष्य मात्र को स्वदेश भक्ति, राष्ट्रप्रेम की भावनाओं को जगाते हुए लिखा है कि जिस देश के पदार्थों अर्थात् जिस देश की मिट्टी, जल, वायु आदि से हमारा शरीर बना है, अब भी पालन हो रहा है, आगे भी होगा उसकी उन्नति तन–मन–धन से करें। हम अपने राष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से कमजोर न होने दें, अपने व्यापारादि कार्यों को इतना अधिक करें कि जिससे राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से बलवान बने और आर्थिक पराधीनता हमारे देश में न आने पावे। मन से अपने राष्ट्र को मजबूत करें अर्थात् हमारे मन में राष्ट्रीय भावना इतनी सुदृढ़ हो कि हम अपने राष्ट्र को कमजोर बनाने वाली शक्तियों का मुकाबला कर सकें, राष्ट्र द्रोही गतिविधि राष्ट्र में न फैलने दें और राष्ट्रद्रोहियों को कदापि सहयोग न करें। 'वयं राष्ट्रे जागृयाम्' (वेद) अर्थात् हम अपने राष्ट्र की सुरक्षा और उन्नति के लिए सदा जागरुक रहें। हम शरीर से अपने राष्ट्र को बलवान बनाएं ये भावनाएं ऋषि ने अपने शब्दों में प्रकट की। ऋषि को भी वेद का सन्देश प्राप्त था कि "माता भूमि पुत्रो अहम् पृथ्विया" परन्तु खेद है, आज राष्ट्र की सुरक्षा को आतंकवाद ने घेर लिया है। भारतवर्ष ने जिस देश को अपनी जमीन का 30 प्रतिशत हिस्सा देकर एक देश बनाया, उसी देश के लोग भारत में आतंकवाद फैला रहे हैं। उसके परिणामस्वरूप सामान्य जन जीवन अस्त–व्यस्त हो गया। आज देश में वोट की राजनीति चल रही है। राष्ट्र रक्षा की राजनीति नहीं और इसका एक मात्र कारण है कि हमने अपनी दण्ड व्यवस्था को मजबूत नहीं किया। जिस आतंकवादी को सुप्रीम कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई, आज ढाई साल से उस आतंकवादी को हमने सुरक्षा प्रदान की हुई है। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है – "राज करने वालों को उचित है कि दण्ड देने योग्य को कभी न छोड़े। एक को कड़ा दण्ड देने से सहस्त्रों मनुष्य इस भांति के अपराधों से दूर रहेंगे और शिक्षा ग्रहण करेंगे। जो दण्ड न दे सके ऐसे व्यक्तियों को राज करने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए।" स्वामी दयानन्द ने शुद्धि और दलितोद्धार का कार्य विशेष रूप से किया। मुझे याद हे कि बचपन में आर्यसमाज में दलित भोज की प्रथा चली थी जिसमें हम सारे लोग दलितों के साथ बैठकर भोजन करते थे और दलितों को समान सम्मान और अधिकार देते थे।

जिस समय ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की उस समय हमारे देश और संस्कृति पर चारों तरफ से आक्रमण हो रहे थे। हमारी शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करके शिक्षित समाज को धर्म और संस्कृति से दूर किया जा रहा था। शिक्षा और सेवा के माध्यम से ईसाई मिशनरी भोले–भाले भारतियों को ईसाई धर्म की ओर आकृष्ट करके हिन्दू धर्म से घृणा और नफरत के बीज पैदा कर रहे थे। हिन्दू देवी–देवताओं पर कीचड़ उछाला जा रहा था। हम हिन्दू धर्म और देवी देवताओं के नाम पर आपस में ही लड़ रहे थे। हिन्दू जाति छुआछूत और ऊंच–नीच की शिकार हो रही थी। एक ईश्वर के नाम अनेक देवी–देवताओं की कल्पना करके ईश्वर के नामों को लेकर आपस में झगड़ रहे थे। नारी जाति को शिक्षा से वंचित करके सती प्रथा के नाम पर इस देश की नारियों को गाजे–बाजे के साथ जलाया जा रहा था। बाल–विवाह आदि कुरीतियों से यह जाति ग्रसित थी। माता–पिता की सेवा का स्थान मृतक पूजा, श्मशान पूजा और कब्रपूजा ने ले लिया था। ऐसे भयानक विनाशोन्मुख हिन्दू जाति की रक्षा के लिए युग महर्षि देव दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ जिसने सारी कुरीतियों से संघर्ष करके मरणासन्न हिन्दू जाति में नव जीवन एवं प्राण डालकर इसकी रक्षा की। यूरोप के प्रख्यात साहित्यकार सन्त रोम्या रोला ने महर्षि दयानन्द के प्रभाव का उल्लेख करते हुए लिखा कि – ***"सिंह के समान निर्भीक प्रकृति वाले महापुरुष दयानन्द के शब्दों की धधकती आग से विधर्मियों का विरोध आत्मसात हो जाता था।"*** ऐसे युग पुरुष दयानन्द सरस्वती ने भारत के निष्प्राण शरीर में अपना अदम्य उत्साह तथा सिंह जैसा रक्त भरकर उसे सजीव कर दिया। उस महापुरुष ने जो मार्ग अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए बनाया था उस पर चलते हुए हम अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए सदा तैयार रहने की प्रतिज्ञा कर 125वें वर्ष को रचनात्मक रूप से सफल बनाएंगे ऐसी मैं आशा करता हूं।

आज हमारा देश विघटन के कगार पर खड़ा है। आज की परिस्थिति पुनः सन् 1947 की जैसी हो रही है। जब देश का विघटन हुआ था।

– शेष पृष्ठ 3 पर

वैदिक विद्वान स्वामी जगदीश्वरानन्द अस्वस्थ

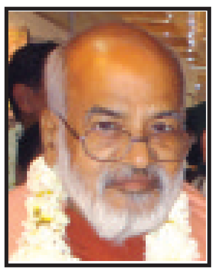

आर्य जगत् के जाने–माने संन्यासी, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान एवं अनेक ग्रन्थों के लेखक स्वामी जगदीश्वरानन्द जी गत कुछ समय से रोग से ग्रस्त हैं। आजकल स्वामीजी माता चन्नन देवी हॉस्पीटल में भर्ती हैं तथा स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं।

उनके स्वास्थ्य लाभ की जानकारी हेतु स्वामी सदानन्द जी (दीनानगर), श्री धर्मपाल आर्य, ब्र0 राजसिंह आर्य जी, आचार्य परमदेव जी, स्वामी यतिश्वरानन्द जी, तथा अनेक आर्यसमाजों के अधिकारीगण निरन्तर सम्पर्क रखे हुए हैं। महाशय धर्मपाल जी निरन्तर उनके स्वास्थ्य लाभ की जानकारी लेने हेतु स्वयं जाते रहे तथा डॉक्टरों को आवश्यक निर्देश भी देते रहे।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि स्वामीजी शीघ्र स्वस्थ होकर दीर्घायु को प्राप्त हों, जिससे वैदिक धर्म के कार्यों को पूर्ण कर हमारा मार्गदर्शन कर सकें।

इन्टरनेट पर बढ़ते आर्यसमाज के कदम : आर्यजन देखें और अपने सुझाव दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा www.delhisabha.com
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा www.aryasabha.com
अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश www.satyarthprakash.com
महर्षि दयानन्द सरस्वती www.swamidayanand.com
आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश www.aryaveerdal.org
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली www.aryakendriyasabha.com
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन www.aryamahasammelan.com

आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या — **दसवां नियम**

सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए....

– प्रो० रत्नसिंह

सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

समाज में कई अवसर ऐसे आते हैं, जब वैयक्तिक और सामाजिक कर्त्तव्यों में विरोध उत्पन्न हो जाता है और हमारे सामने दो पक्ष उपस्थित होते हैं। एक पक्ष व्यक्ति को ही प्रमुखता देता है, उसकी दृष्टि में व्यक्ति सर्वोपरि है, क्योंकि व्यक्तियों से समाज का गठन होता है। व्यक्ति है, अतः व्यक्ति को सामने रखकर ही हर व्यवस्था और नियम बनना चाहिए। दूसरा पक्ष समाज को ही प्रमुखता देता है, क्योंकि समाज से पृथक व्यक्ति की कोई सत्ता नहीं है। प्रत्येक बात के लिए वह जन्म से लेकर मरण्यपर्यन्त समाज पर ही आश्रित रहता है। वर्तमान में कम्युनिस्ट विचारधारा इसी की पक्षधर है। इस विचारधारा के अनुसार वैयक्तिक स्वतंत्रता का कोई अस्तित्व ही नहीं रहता, व्यक्ति समाज के लिए भाड़े का एक टट्टू हो जाता है। कम्युनिज्म में व्यक्ति को मिटा दिया जाता है, उसकी स्वतंत्रता का अपहरण कर लिया जाता है और व्यक्ति राजनीतिकदल रूपी मशीन का एक पुर्जा मात्र रह जाता है, उसकी स्वतंत्रता नष्ट हो जाती है, वह अपने–आप कुछ नहीं सोच सकता।

वस्तुतः ये दोनों पक्ष अधूरे हैं और सामाजिक समस्या का संतोषजनक समाधान करने में असमर्थ हैं। प्रस्तुत दशम नियम में इस समस्या का सही संतोषजनक समाधान किया गया है। इस नियम में व्यक्ति की स्वतंत्राता और परतंत्राता ही सीमा नियत की गई है। हर प्रकार के सामाजिक नियम के पालन करने में परतंत्रा रहने की बात इस नियम में नहीं कही गई। बाल–विवाह, सतीप्रथा, अस्पृश्यता और दहेज आदि समाजों के कई सामाजिक नियम हैं, किन्तु ये नियम सर्वहितकारी न होकर अहितकारी हैं, अतः व्यक्ति को इस प्रकार के नियमों का पालन नहीं करना चाहिए और उनके विरूद्ध विद्रोह करना चाहिए। वास्तव में व्यक्ति को केवल उन्हीं सामाजिक नियमों का पालन करना चाहिए जो सर्वहितकारी प्रतीत होते हों, परन्तु जिनसे समाज के गौरव को क्षति पहुँचती हो, धर्म की हानि होती हो उन कर्मों को करने में व्यक्ति परतंत्र है, परन्तु कुछ वैयक्तिक हितकारी नियम ऐसे भी हैं, जिनके पालन करने से सामाजिक हानि नहीं होती। एक उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। शास्त्रों में कहा है कि व्यक्ति को प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर धर्मार्थ का चिन्तन करना चाहिए। क्या सभी व्यक्ति इसका पालन कर सकते है? सायं छह बजे से रात्रि दो बजे तक ड्यूटी देने वाला कर्मचारी फैक्टरी से घर लौटकर ढ़ाई बजे सोता है और उसे लगभग पांच–छह घण्टे की नींद भी लेनी चाहिए। उससे कैसे आशा की जा सकती है कि वह प्रातः चार बजे ब्रह्ममुहूर्त में जागकर धर्मार्थ का चिन्तन करे। हाँ जो व्यक्ति रात्रि नौ बजे सोता है, उसे अवश्य प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में जग जाना चाहिए। इस बात को सभी जानते हैं कि समाज के सभी व्यक्तियों की स्थिति और साधन नहीं हैं, इसलिए अपने वैयक्तिक कर्त्तव्यों यथा–शयन, जागरण, स्नान, व्यायाम, भोजन, स्वाध्याय करना आदि में सब स्वतंत्रा हैं।

पतंजल– योगदर्शन में यम–नियम पालन करने की बात कही गयी है। यम पाँच हैं– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ये सभी सामाजिक कर्त्तव्य हैं जिनके पालन करने में प्रत्येक व्यक्ति को परतंत्रा रहना चाहिए। इनका पालन न करने पर उसे सामाजिक और राजकीय दण्ड भोगने के लिए तैयार रहना चाहिए। नियम भी पाँच हैं– शौंच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर–प्राणिधान। ये मनुष्य के वैयक्तिक कर्त्तव्य हैं। इनका पालन करने में व्यक्ति स्वतंत्र है। इनका सम्यक पालन करने वाले व्यक्ति का हित होता है।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि सामाजिक और वैयक्तिक कर्त्तव्य का पालन साथ–साथ करना चाहिए, केवल एक के पालन से व्यक्ति का हित नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द मनुस्मृति के आधार पर सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास तीन में लिखते हैं– "यमों के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करें, किन्तु इन दोनों का सेवन किया करें। जो यमों का सेवन छोड़के केवल नियमों का सेवन करता है। वह उन्नति को नहीं प्राप्त होता, किन्तु अधोगति, अर्थात् संसार में गिरा रहता है।"

इस दसवें नियम में स्वतंत्रता और परतंत्रता का बड़ा सुन्दर समन्वय किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता प्रिय है और परतंत्रता अप्रिय, अर्थात् स्वतन्त्रता को सभी चाहते हैं कि परतंत्रता से घृणा करते हैं, परन्तु ध्यान रहे कि स्वतंत्रता का अर्थ उच्छृंखलता नहीं है, जो स्वयं सामाजिक विघटन का प्रमुख कारण है, इसलिए इस नियम में आदेश दिया गया है कि–सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र और प्रत्येक वैयक्तिक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें। इत्योम्।।

-ः साभार ः-
आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या

***प्रिय पाठकों!** इस अंक में प्रो० रत्नसिंह जी रचित पुस्तक 'आर्यसमाज के दस नियम – संक्षिप्त व्याख्या' में से दसवें नियम की व्याख्या के साथ नियमों की श्रृंखला समाप्त हो गई है। सुधि पाठकों से प्रार्थना है कि वे इस श्रृंखला के विषय में अपनी प्रतिक्रिया लिखकर भेजें। आपकी प्रतिक्रिया/टिप्पणी को आर्यसन्देश में अवश्य स्थान दिया जाएगा। आगामी अंक से इसके स्थान पर कोई नई श्रृंखला आरम्भ की जाएगी। – सम्पादक*

Question & Answer

Havan & Yoga

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q.: I do havan every day one time during the sunlight as you have suggested. Swamiji what should I do instead of havan when I am on outing?Can I do after sunset? **Dhanesh Padhya**

Ans: You're going on the best pious deed and worship of God. Really God is pleased. You can do havan after sunset also if in daylightit is not possible. Because you'll sure get the spiritual benefit for the same.

Q.: 'Dwa Suparna Suja Sakhaya..' clearly points to 'Traitwad'. How did 'Adwaitwad come into existence? **CK Vatsa**

Ans.: Present advaitwad looks to be self made due to not studying Vedas regularly and traditionally, please.

Q.: Is Arya Samaj sanstha by Dayanand Sarswati ji can guide me or preach me about Vedas? **Dhanesh Padhya**

Ans.: Yes please.You can contact the above sanstha. You are also advised to study my two- three books on Vedas to gain the knowledge at the beginning.

Q.: Please tellme importance of BUTTERFLY ASSANA in yoga. **Rashmi**

Ans.: It is beneficial for digestion and to make the bones flexible. But main importance of this Asan is to make the body able to do pranayaam easily and beneficially.

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

संस्कृतभाषायां व्याकरणस्य उपयोगिता

– डॉ0 राजेश सिंहः

गतांक से आगे :–

अन्यशब्देषु–यथा मुखं अभिव्यक्तेः विश्लेषणस्य च साधनमस्ति तद्वत् व्याकरणमपि पद–पदार्थ–वाक्य–वाक्यार्थ–प्रकृति–प्रत्ययादेश्च विश्लेषणस्य साधनं भवति। तदेव मनसि निधाय केनचित् विदुषां अभिमतम्–

शास्त्रेष्वाद्य व्याकरणं, मुख्यंतत्र पाणिनेः।
रम्यं तत्र महाभाष्यं, रम्या तत्रापि पस्पशा।।

व्याकरणशास्त्रस्य प्रधानत्वे अन्यापि सुप्रसिद्धिरस्ति –

"प्रथमो हि विद्वांसो वैयाकरणाः।" इति। अयमाशयः यत् व्याकरणमधीत्वयैव शास्त्रान्तरेषु विषयान्तरेषु प्रवेशं कुर्यात्। अतएव साधूक्तम्– शास्त्रोष्वाद्यं व्याकरणमिति। पतञ्जलिमहर्षिणापि स्पष्टमुक्तम् – "प्रधानं च षडङ्गेषु व्याकरणम्। प्रधाने च कृतो यत्नः फलवान् भवति।" अतएव किञ्चिदपि यदि पठितुं नेष्यते व्याकरणं अवश्यं पठनीयम् इति वैयाकरणानां आचार्याणामभितम्। तथाहि श्रूयते ..

– क्रमशः

प्रथम पृष्ठ का शेष

भारत को पुनःखण्डित करने के लिए पाकिस्तान योजनाबद्ध तरीके से आतंकवाद का प्रशिक्षण देकर देश में अशान्ति और अराजकता पैदा कर रहा है। हिन्दू एवं हिन्दुत्व दोनों पर चारों ओर से प्रहार हो रहा है। कश्मीर में राष्ट्र विरोधी गतिविधियां दिन–प्रतिदिन सक्रिय होती जा रही हैं। देश के समुद्री तटों का विस्तृत भूभाग तस्करों और राष्ट्र द्रोहियों का कार्यक्षेत्र और निवास क्षेत्र बना हुआ है। ऐसी परिस्थितियों में देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि समस्त हिन्दू जाति एक संगठनसूत्र में बंधकर अपने को संगठित करे एवं देश व जाति पर आने वाले संकटों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे एवं इस निर्णय पर पहुंचे कि राष्ट्रीय एकतात्मता हेतु हिन्दू एकता कितनी अनिवार्य है और हमें एकता सूत्र में बंधकर क्या करना चाहिए। 1947 से पहले अल्पसंख्यकों ने आवाज उठाई थी कि वे हिन्दुओं के साथ मिलकर नहीं रह सकते और उसका परिणाम हुआ कि तात्कालिक नेताओं की तुष्टिकरण की नीति और ब्रिटिश सरकार की कूटनीति के कारण देश में अल्पसंख्यकों के 23 प्रतिशत जनता को देश का 30 प्रतिशत भूभाग देकर देश के टुकड़े कर दिए गए। देश के टुकड़े करने के बाद भी जो लोग इस देश में रह गए वह अल्पसंख्यक समुदाय की सुविधाएं प्राप्त करने लगे। राजनैतिक पार्टियां और उनके नेता मतों के लालच में अल्पसंख्यकों के हितों की आवाज उठाने की प्रतिस्पर्धा में लगे हुए हैं और बहुसंख्यक हिन्दू एकता न होने के कारण कोई भी राजनैतिक नेता हिन्दुओं के हित के लिए बोलने को तैयार नहीं है। दूसरी ओर हम धर्म निरपेक्षता और सर्व धर्म समभाव के स्वप्न लोक मे विचर रहे हैं जिसे अल्प संख्यक किसी भी कीमत पर मानने को तैयार नहीं हैं।

आज हमें महर्षि द्वारा बताए गए मार्ग का गम्भीरता से चिन्तन करना होगा और आप से आग्रह करूंगा कि ऋषि दयानन्द के आदेशों का हम मन–वचन–कर्म से पालन करें। 16 संस्कार, पंच महायज्ञ, वर्ण आश्रम का हम व्यावहारिक रूप से पालन करें। यदि हमने ऐसा करने का दृढ़ निश्चय किया तो इस निर्वाण वर्ष की महान उपलब्धि होगी। यदि प्रत्येक आर्य बहिन–भाई अपना समय समाज के लिए देगा तो निश्चित ही समाज के कार्यों में गति आएगी। आर्यसमाज की प्रगति से हिन्दुओं में भी गति आएगी।

गुरुकुल कांगड़ी के एक समारोह में पं. मदनमोहन मालवीय ने कहा था – ***"यदि आर्यसमाज दौड़ता है तो हिन्दू चलता है।"*** हिन्दुओं को चलाने के लिए आर्यसमाज को दौड़ना पड़ेगा, जलता दीपक ही बुझे हुए दीपक को जला सकता है। आर्य बहिन–भाई जलते हुए दीपक की भांति स्वयं को बनाकर हर घर तक ऋषि के मिशन को पहुंचाएंगे। तभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' हो सकेगा और हम महर्षि के ऋण से उऋण हो सकेंगे। आज हमारा युवा वर्ग आर्यसमाज से दूर हो रहा है क्योंकि हमने उनमें वैदिक धर्म, राष्ट्रधर्म की भावनाएं नहीं भरी। मेरा अनुभव है कि जहां–जहां आर्यसमाज का नेतृत्व युवा वर्ग कर रहे हैं वहां आर्यसमाज का बहुत कार्य हो रहा है। उदाहरण के लिए आर्यसमाज सान्ताक्रुज, गांधीधाम और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा है। दिल्ली मे जो कार्य प्रतिनिधि सभा के युवा महामन्त्री विनय आर्य कर रहे हैं सम्भवतः ऐसा कार्य कहीं और नहीं हो रहा है। अतः मेरी प्रार्थना है कि हम आर्यसमाज को युवा वर्ग के हाथों में सौंपकर उसका उचित निर्देशन करें ताकि आर्यसमाज में नवजीवन का संचार हो।

आजआर्यसमाज के पास आर्यसमाज के भवनों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, अनाथालयों और गौशाला के रूप में अरबों की सम्पत्ति है जिनका उचित उपयोग नहीं हो रहा है। हम सम्पत्तियों पर या तो एकाधिकार करके बैठे हुए हैं या अवसर आने पर उन्हें बेच रहे हैं। अभी हाल ही में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल की कई एकड़ भूमि धन लोलुप व्यक्तियों ने बेच दी है। त्याग और तपस्या की मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द ने कितनी कठिनाइयों के साथ इस गुरुकुल की स्थापना की और हम उस सम्पत्ति को बेच रहे हैं। ऋषि निर्वाण के इस वर्ष में हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि हम किसी भी हालत में उस भूखण्ड को क्रेता के चुंगल से छुड़ाकर ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें और आर्यसमाज की सम्पत्ति का सदुपयोग वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार में करें।

मैं इस आशा के साथ अपने इस लेख को समाप्त करता हूं कि हम सब मिलकर देश और जाति के उत्थान के लिए कमर कस कर सत्यमार्ग का अनुसरण करते हुए कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ते रहेंगे। मैं सारांश में यह कहना चाहूंगा कि :–

1. हम प्रातः सायं परिवार के साथ संध्योपासना और हवन करें।
2. अपने बच्चों में वैदिक धर्म की शिक्षा देकर उन्हें आर्य बनाएं।
3. ऋषि दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चलकर पाखण्ड, जातिप्रथा आदि से अपनों को दूर रखें।
4. सत्य की उपासना करें और संसार का उपकार करना अपना मुख्य उद्देश्य बनाएं।
5. हम आर्यों की एक बिरादरी बनाएं ताकि हमारा संगठन मजबूत हो।
6. गुरुकुलों को पूर्ण संरक्षण दें क्योंकि वैदिक विद्वान् वहीं तैयार हो सकते हैं।
7. हम आर्यसमाज की सम्पत्तियों का उपयोग लोकतान्त्रिक ढंग से करें।
8. आर्यसमाज को युवा वर्ग के हाथों में सौंपें।
9. महर्षि दयानन्द के विराट व्यक्तित्व को अभिवादन करें और उनके बताए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करें।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
614, मिल्टन अपार्टमेंट, जुहूतारा, मुम्बई – 49

बोध कथा

व्रत का अर्थ – वचन का पालन

– महात्मा आनन्द स्वामी

एक थी बूढ़ी माँ। उसके चार बेटे थे। एक दिन बूढ़ी माँ ने व्रत रखा। बड़े बेटे ने सोचा– ''माँ ने व्रत रखा है, उसके लिए कुछ भेजना चाहिए।' दो दर्जन चित्ती वाले केले उसने भेज दिये।

दूसरे पुत्र ने सोचा–''मां ने व्रत रखा है, अन्न तो वह खा नहीं सकती।' उसने डेढ़ सेर दूध भेज दिया।

तीसरे पुत्र ने सिंघाड़े के आटे से बने हुए एक सेर पकौड़े भेज दिये। चौथे ने फलों का एक टोकरा भेज दिया।

रात्रि में चारों पुत्र मां के पास पहुंचे तो बड़े लड़के ने कहा–"माँ तुझे दो दर्जन केले मैंने भेजे थे।'

माँ ने कहा– ''हाँ बेटा! वे मैने सब खा लिए, मेरा व्रत है न ! रोटी तो मैं खा नहीं सकती।'

दूसरे पुत्र ने कहा–'' माँ, मैंने डेढ सेर दूध भेजा था?''

माँ ने कहा–''हाँ पुत्र! वह मैंने सब पी लिया।'

तीसरे पुत्र ने कहा–''माँ मैंने पकोड़े भेजे थे?'' माँ बोली–हाँ बच्चा! अच्छे थे पकोड़े। मैंने खा लिए।

चौथे पुत्र ने कहा–''परन्तु माँ! फलों का वह टोकरा तो होगा, जो मैंने भेजा था?''

माँ बोली–''कहाँ बेटा! मैंने वह सारा टोकरा समाप्त कर दिया, मेरा व्रत जो था!'बड़े बेटे ने यह बात सुनी तो दौड़ा हुआ मकान की छत पर पहुँचा और पुकार–पुकारकर कहने लगा–''ओ मुहल्ले वालो! अपने–अपने बच्चों को संभालकर रखना, हमारी माँ ने व्रत रखा हुआ है।'

नहीं, यह व्रत नहीं है। व्रत का अर्थ यह है कि जो वचन मैंने किया है, उसे जीवन–भर पूर्ण करूँ। व्रत का अर्थ भूखों मरना भी नहीं।

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (21)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

असति प्रतिज्ञो परोधो यौग पद्यमन्यथा।।21।।

अर्थ – (असति) [कारण के] न होने पर (प्रतिज्ञोपरोधः) प्रतिज्ञा की बाधा है (यौगपद्यम्) एक साथ होना (अन्यथा) नहीं तो।

भावार्थ – यदि यह मान लिया जाए कि पहले क्षण में कारण के न होने पर उत्तर (बाद के) क्षण में कार्य की उत्पत्ति हो जाएगी तो परमाणुवादियों की यह प्रतिज्ञा (मान्यता) भंग हो जाएगी कि एक परमाणु दूसरे परमाणु की उत्पत्ति का कारण है। अथवा ऐसा मानना पड़ेगा कि कारणऔर कार्य दोनों एक ही समय में साथ–साथ रहते हैं। ऐसी स्थिति में यह दोष बराबर बना रहेगा कि पूर्वक्षणवर्ती परमाणु का उत्तरवर्ती परमाणु के उत्पत्ति के समय में विद्यमान रहेगा क्योंकि पूर्वक्षणवर्ती परमाणु का उत्तर क्षण वर्ती परमाणु के समय में रहना सिद्ध होता है जबकि परमाणुवादी प्रत्येक भाव को क्षणिक मानते हैं और पूर्वक्षणवर्ती परमाणु के नाश के समय उत्तरक्षण वर्ती परमाणु की उत्पत्ति मानते हैं और पूर्वक्षणवर्ती परमाणु के नाश के समय उत्तर क्षणवर्ती परमाणु की उत्पत्ति मानते हैं। इसलिए ये परमाणुवाद असम्भव और बुद्धि विरुद्ध होने के कारण मानने योग्य नहीं है।

यहां प्रश्न होता है कि जब पूर्वक्षण के बिना उत्तरक्षण उत्पन्न हो जाता है तो पूर्वक्षण उत्तर क्षण कैसे हो सकता है? इसका मतलब यह हुआ कि कारण के बिना कार्य हो जाता है। ऐसा मानने पर यह आपत्ति होगी कि हर कार्य हर स्थान पर हो सकता है क्योंकि कारण का अभाव तो सभी जगह समान है। इससे कारण कार्य व्यवस्था ही भंग हो जाएगी।

परमाणुवाद की विचारधारा में और क्या दोष हैं इसे बताते हुए सूत्रकार अगले सूत्र में इसे स्पष्ट करते हैं।

– सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर रक्तदान शिविर

रक्तदान करते आर्यजनों के साथ आयोजक

आर्य समाज, सैक्टर–2, महर्षि दयानन्द नगर, तलवंडी, जिला कोटा (राज.) के वार्षिकोत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदानदिवस पर 21 दिसम्बर, 08 को रक्तदान शिविर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता ने कहा कि राजस्थान में कोटा ही एकमात्र ऐसी जगह है जहां लोग उत्साह के साथ रक्तदान करते हैं। शिविर का आयोजन आर्यसमाज जिला सभा व लॉयन्स कल्ब कोटा के सौजन्य से किया गया।

– कुलदीप सुमन, उपमन्त्री

आर्यसमाज गंगापुर सिटी, संवाई माधोपुर (राज.) का

सप्त दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज गंगापुर सिटी, पुरानी अनाजमंडी के प्रांगण में 25 से 31 दिसम्बर, 08 को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 24 दिसम्बर को ध्वजारोहण कर विशाल शोभायात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होकर निकाली गई।

यज्ञ का आयोजन आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की आचार्या प्रियम्वदा जी के ब्रह्मत्व में कई पारियों में किया, प्रातः 5 से 7, 8 से11 बजे तथा दोपहर 2 से 5 बजे तक किया गया। पूर्णाहुति कार्यक्रम में 80 यजमानों ने आहुतियां प्रदान की। इस अवसर पर आचार्य राजू वैज्ञानिक के प्रवचन तथा श्री जगत वर्मा के भजन हुए।

– सत्य प्रकाश आर्य, प्रचारमन्त्री

सोमसुधा वैदिक काव्य का विमोचन

वैदिक सोम सम्बन्धी भ्रमों को दूर करने वाली कृति 'सोमसुधा' का विमोचन म0प्र0 हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति माननीय श्री वीरेन्द्र दत्त जी ज्ञानी के कर कमलों से इन्दोर में सम्पन्न हुआ।

यह पुस्तक श्री रमेश चन्द्र चौहान जी के अथक परिश्रम से तैयार की गई है।

– रमेशचन्द्र चौहान
262ए, पार्श्वनाथ नगर,
केशरबाग रोड, इन्दौर (म.प्र.)

आर्य विद्या परिषद् हरियाणा से सम्बन्धित एवं संचालित आर्य शिक्षण संस्थाओं के

शिक्षकों की नैतिक शिक्षा एवं वैदिक सिद्धान्त की परीक्षा सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद् हरियाणा के प्रस्तोता श्री वेदपाल आर्य जी के अथक प्रयास से हरयाणा प्रान्त में प्रथम बार सभा से सम्बन्धित एवं संचालित आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यों, मुख्याध्यापकों एवं अध्यापकों की नैतिक शिक्षा एवं वैदिक सिद्धान्तों की परीक्षा 11 जनवरी, 09 को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई। परीक्षा में 384 – प्रधानाचार्य, मुख्याध्यापक, अध्यापक एवं अध्यापिकाएं सम्मिलित हुए।

अध्यापकों ने यह माना कि इस परीक्षा से हमें आध्यात्मिक ज्ञान की विशेष जानकारी हुई। ईश्वर, जीव, प्रकृति जैसे गूढ़ विषयों की जानकारी, पराविद्या और वैदिक साहित्य के संक्षिप्त परिचय की पुस्तकों से मिली, जो आचार्य ज्ञानेश्वर जी दर्शनाचार्य द्वारा लिखित हैं।

परीक्षा के बाद प्रस्तोता श्री वेदपाल आर्य ने सभी शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मनुष्य जीवनमें वेदमार्ग पर चलने से सुख और शान्ति निश्चित रूप से मिलती है। हमें वेदानुगामी बनना चाहिए और इस परीक्षा का आयोजन इसलिए किया गया है कि हमारे शिक्षक स्वयं नैतिक शिक्षा एवं वैदिक दर्शन से भलीभांति परिचित होकर देश के भविष्य के कर्णधार विद्यार्थियों को सभ्य नागरिक बनाकर अपने, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन अच्छी तरह से करा सकें।

– मन्त्री, हरियाणा सभा

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा ने

निराश्रित बच्चों को वस्त्र एवं भोजन बांटे

निराश्रित बच्चों को संस्कार व शैक्षणिक गतिविधियों के साथ जोड़कर उनके शारीरिक एवं बौद्धिक, मानसिक विकास करना समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों और समाजिक कार्यकर्ताओं का उत्तरदायित्व है बल्कि यह कहा जाए कि यह कर्त्तव्य है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। निराश्रित बच्चों की दशा एवं दिशा ही उनका भविष्य निर्धारण कर उनके कार्यकलापों का मापदण्ड तय करेगा। उक्त विचार जिला आर्यसमाज कोटा के तत्वावधान में मधुस्मृति महिला एवं बाल कल्याण उत्थान संस्थान रंगबाड़ी कोटा के परिसर में निराश्रित बच्चों को भोजन, पाठ्यक्रम एवं वत्रादि भेंट करने के उपरान्त मुख्य अतिथि स्वामी हर्षानन्द जी ने व्यक्त किए। बांटी गई सामग्री कैलाश रंजना अदलखा द्वारा उपलब्ध कराई गई।

– अरविन्द पाण्डेय, का. मन्त्री

आर्यसन्देश – चतुर्थ अंक : नारी संसार

क्यों बदल रहे हैं रिश्ते भाई–बहन के

हमारे देश में प्रत्येक पर्व या त्योहार अपने आप में अधिक महत्वपूर्ण तथा गरिमायुक्त है, किन्तु 'राखी' या रक्षाबन्धन को सुदृढ़ता प्रदान वाला भावनात्मक सम्बन्ध का पोषक पर्व है। सदियों से इस पर्व का महत्व रहा है। अथाह स्नेह के सागर में डूबी हुई बहन इस पर्व को भाई के हाथ में रेशम का धागा बांधकर भाई को स्वरक्षा का प्रतिवर्ष स्मरण कराती है। श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि को यह पर्व मनाया जाता है।

राखी का पर्व अब कुछ बहनों के लिए अर्थिक लाभ मात्र बनकर रह गया है। कहीं–कहीं बहनें मात्र इसलिए भाई को राखी बांधती हैं कि इसके बदले में उन्हें भाई द्वारा अच्छी भेंट या रुपये मिलेंगे। कितनी बहने ऐसी भी हैं, जिनके भाई ने यदि किसी कारणवश रुपये देने बन्द कर दिए तो वे यह सोचकर राखी नहीं बांधती कि क्या फायदा, भाई तो फूटी कौड़ी भी नहीं देता, फिर मैं ही क्यों राखी बांधू?। वे इस बात को नहीं समझतीं कि रिश्तों का क्या कोई मूल्य नहीं होता है?

आज के भौतिकवादी युग में बहन और भाई का सम्बन्ध भी धीरे–धीरे औपचारिक होता जा रहा है, त्याग की भावना बिल्कुल समाप्त होती जा रही है। यही कारण है कि यदि परिस्थितिवश कभी बहनों को भाई के आश्रय में रहना पड़ा, तो स्वाबलम्बिनी होकर जीवन–यापन का मार्ग ढूंढने का प्रयास करती हैं या फिर अन्य का सहारा ढूंढती हैं।

उक्त सामाजिक वातारण में 'राखी' की गरिमा या महत्व को कायम रख पाना कठिन है, फिर भी भाई–बहन परस्पर स्नेहिल सम्बन्ध को तन–मन–धन से निभा रहे हैं।

चंद प्रमादी लोग किसी पर्व की गरिमा को थोड़ी सी आंच भले ही देदें, पूर्णतः कदापि समाप्त नहीं कर सकते। अतः भले ही 'राखी' के महत्व को समझने में भूल कर रहे हों, इसकी गरिमा स्वयं में कभी कम नहीं हो सकती।

– डॉ0 अनामिका प्रकाश,
जी–9, सूर्यपुरम्, नन्दनपुरा,
झांसी (उ0प्र0)

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी (हाथरस) उ.प्र. का

99वां महोत्सव

30, 31 जनवरी एवं 1 फरवरी, 09

चतुर्वेद शतकम यज्ञःप्रातः 7–8.30बजे
ब्रह्मा : डॉ. भारतभूषण विद्यालंकार
दीक्षान्त समारोह : 1 फरवरी, 09

यात्रियों के भोजन एवं ठहरने की व्यवस्था गुरुकुल में की जाएगी। आर्यजन पधारकर धर्मलाभ उठाएं।

– रमेशचन्द्र आर्य, प्रधान
दीनदयाल सिंह, मन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष पर
विभिन्न आर्यसमाजों में आयोजित/सम्पन्न होने वाले विशेष कार्यक्रम

आप सबको विदित ही है कि यह वर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण का 125वां वर्ष चल रहा है। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती 125वां निर्वाण वर्ष आयोजन समिति द्वारा विभिन्न आयोजन वर्ष भर, विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए जाने हैं। आपसे सब निवेदन है कि इस अवसर पर आप अपने आर्यसमाजों में, पार्कों में, तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अधिकाधिक कार्यक्रम आयोजित करें तथा अपने समस्त कार्यक्रमों के पत्रकों आदि पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण वर्ष का लोगो अवश्य प्रकाशित करें जिससे आमजन मानस में भी महर्षि दयानन्द की पहचान जा सके और वे भी महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज और वैदिक धर्म एवं उसकी मान्यताओं की ओर आकर्षित हो सकें। इस अवसर पर आप जो भी कार्यक्रम आयोजित करें उन्हें प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें। साप्ताहिक आर्यसन्देश में उन्हें विशेष स्थान दिया जाएगा। – *सम्पादक*

125वें निर्वाण वर्ष पर आर्यसमाज रोहिणी में
मकर संक्रान्ति पर्व एवं 21 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज रोहिणी द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर मकर संक्रान्ति पर्व एवं 21 कुण्डीय विशाल यज्ञ 8 से 11 जनवरी तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ वैदिक विद्वान् डॉ0 विनय विद्यालंकार तथा उपाचार्य रामकिशोर शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ। इस अवसर पर मानव समाज को महर्षि दयानन्द सरस्वती की देन विषय पर तथा मकर संक्रान्ति पर्व पर सारगर्भित प्रवचन श्री भानुप्रताप शास्त्री के हुए।

इसी क्रम में स्वामी श्रद्धानन्द जी के 82वें बलिदान दिवस के अवसर पर 28 दिसम्बर को आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर–7 में खेलकूद प्रतियोगिताएं हुईं। सभी आयु वर्ग के लिए दौड़, मेंढक दौड़, संगीतमय कुर्सी दौड़, खो–खो, कबड्डी, बोरी कूद आदि खेल आयोजित किए गए। प्रतियोगिता का उद्घाटन आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रवीण कुमार गुप्ता ने किया। प्रतियोगिता में सभी समाजों से बच्चों, पुरुषों एवं महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

– अश्विनी आर्य, प्रधान
नरेश पाल आर्य, मन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण के 125वें वर्ष पर आर्यसमाज जहांगीरपुरी में
यज्ञ, प्रवचन एवं नेत्र जांच शिविर सम्पन्न

रविवार दिनांक 4 जनवरी, 09 को श्री साधु बिशन हॉल वैदिक सत्संग भवन संत रविदास नगर (जहांगीरपुरी) दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष एवं नव वर्ष 2009 के अवसर पर यज्ञ, प्रवचन, निशुल्क नेत्र शिविर, आर्यवीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन, गरीब असहाय महिलाओं को सिलाई मशीन वितरण, कम्बल वितरण एवं ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री बलराम शास्त्री के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रखर विद्वान श्री छविकृष्ण शास्त्री, आचार्य धूम सिंह, श्री जुगल किशोर, योगनिष्ठ वेदाचार्य स्वामी श्रेयोनन्द विदेह यति, स्वामी सुखानन्द, कवि विनय शुक्ला एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने अपने ओजस्वी वक्तव्यों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर ध र्म क्या है, किसे कहते हैं क्यों अपने जीवन में इसे जीवन में अपनाना चाहिए? पर विद्वानों ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर डॉ. सतीस आहुजा नेत्र विशेषज्ञ एवं उनकी टीम का विशेष सहयोग मिला। इस अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश 10/– रुपये में देने की भी घोषणा श्री विनय आर्य द्वारा की गई।

– रामभरोसे साह आर्य

आर्यसमाज बिडला लाइन्स, दिल्ली के 79वें स्थापना दिवस तथा
125वे निर्वाण वर्ष पर भजन संध्या

शुक्रवार 30 जनवरी, 2009
यज्ञ : सायं 6.30 से 7.00 बजे
ब्रह्मा : आचार्य कुवंर पाल शास्त्री
भजन प्रस्तुति : श्री नरेन्द्र वशिष्ठ
सायं 7.00 से 9.00 बजे
प्रीतिभोज : रात्रि 9.00 बजे

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– योगेश कुमार आर्य, प्रधान
नरेन्द्र आर्य, मन्त्री

125वें निर्वाण समारोह पर
श्रीमती स्नेहलता आर्य सम्मानित

श्रीमती स्नेहलता पुत्री श्री करण सिंह आर्य, निवासी कोटा (राज.) का सम्मान महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण दिवस अवसर पर 5 से 8 नवम्बर, 08 तक परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिभा सम्मान समारोह में संगीत के क्षेत्र में विशेष योगदान देने के लिए दिया गया।*– अशोक पाण्डेय, का.मन्त्री*

महर्षि दयानन्द सरस्वाती के 125वें निर्वाण वर्ष पर
यजुर्वेद भाष्य का गुजराती भाषा में विमोचन

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मभूमि गुजरात प्रान्त के मुख्यमन्त्री श्री नरेन्द्र जी मोदी ने गुजराती भाषा में यजुर्वेद भाष्य ग्रंथ का विमोचन 29 दिसम्बर 2008 को किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्राचीन निरुक्त व वैदिक व्याकरण का आधार लेकर जो भाष्य संस्कृत व हिन्दी भाषा में किया था उसका गुजराती भाषा में यह सर्वप्रथम प्रकाशन है। 944 पृष्ठ के इस बृहद् ग्रंथ का प्रकाशन वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्य वन, रोजड, जि. –साबरकांठा से किया गया है। मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र जी मोदी ने यजुर्वेद ग्रंथ को गुजराती भाषा में देखकर कहा कि यह बहुत अच्छा कार्य हुआ। मैं मानता हूँ कि वेद सचमुच में एक बहुत बड़ा खजाना है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा कि – हम डॉक्टर नहीं पर ये इंसान है इतना तो जानते हैं अर्थात् हम वेद को सूक्ष्मता से नहीं जानते हैं किन्तु वेद की महत्ता समझते हैं। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि यजुर्वेद भाष्य ग्रंथ को 5 स्टार होटल में रखवाने का प्रबंध करना चाहिए जैसे कि बाइबिल ऐसे होटलों के प्रत्येक कमरों में रखी जाती है। विधानसभा पुस्तकालय जैसे महत्त्वपूर्ण स्थानों में भी इसको पहुंचाना चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का समाधान वेद में है। ऐसे विषयों को प्रस्तुत करने वाली पुस्तकों की रचना आज के युग की माँग है। आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य ने मोदी जी की जिज्ञासा के उत्तर में बतलाया कि ऋग्वेद में समस्त पदार्थो का ज्ञान, यजुर्वेद में कर्मकांड, जीवन को कैसा बनाए, व्यवहार, सामवेद में स्तुति, ध्यान, उपासना, अथर्ववेद में विज्ञान का विषय है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्वस्तरीय मनुष्य के लिए कर्त्तव्य कर्म तथा अकर्त्तव्य कर्म कौन–कौन से हैं, इसका सरल ज्ञान देने वाले ग्रंथ यजुर्वेद के 1975 मंत्र, संस्कृत पद, उनके अर्थ और भावार्थ का गुजराती भाषा में अनुवाद आयुर्वेद युनिवर्सिटी के निवृत्त विभागाध्यक्ष श्री वैद्य दयाल मुनि जी आर्य द्वारा किया गया है। इस विमोचन के अवसर पर आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम जी रूपाला, अग्निपथ साप्ताहिक के संपादक श्री अरविन्द जी राणा, आश्रम के सचिव श्री ब्र. दिनेशकुमार जी तथा ट्रस्टी श्री चन्द्रेश जी आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

– आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य

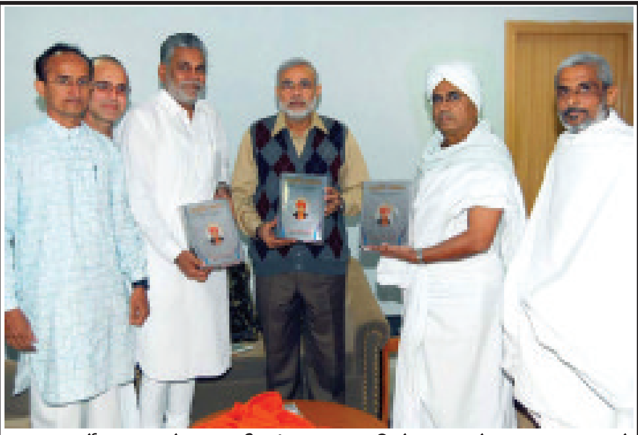

यजुर्वेद भाष्य के गुजराती संस्करण का विमोचन करते गुजरात राज्य के मुख्यमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी। साथ में हैं आचार्य श्री ज्ञानेश्वर आर्य तथा अन्य आर्यजन एवं गणमान्य महानुभाव।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) – 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1

आवश्यकता है

दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) निम्नलिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती हैं :–

1. वैदिक विद्वान/प्रवक्ता – 1 : वैदिक मान्यताओं/आर्यसमाज से सम्बन्धित प्रश्नों/शंकाओं का उत्तर ऑनलाइन दे सके तथा मीड़िया तक आर्यसमाज की बातों एवं कार्यों को प्रमुखता से पहुंचा सके। शैक्षिक योग्यता : गुरुकुलीय पद्धति से उच्च शिक्षा विद्यामार्तण्ड/वेदालंकार/विद्यालंकार। वाछनीय : कम्प्यूटर पर कार्य करने का सामान्य ज्ञान। बेहतर मानदेय के साथ आवास सुविधा भी प्रदान की जाएगी। युवाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।

2. भजनोपदेशक – 1: सुमधुर आवाज, कोमल कण्ठ, महर्षि दयानन्द, वैदिक सिद्धान्तों तथा आर्यसमाज के मन्तव्यों से पूर्णतया परिचित हो। हॉरमोनियम अन्य वाद्य यन्त्र भी बजाने की योग्यता रखते हों। युवाओं को वरीयता दी जाएगी।

3. वैब डिजाइनर – 1: वैब साइट डिजाइनर जिन्हें बैबसाइट बनाने तथा उन्हें नियमित अपडेट रखने का अनुभव हो। अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी भाषा में कार्यकरने वालों को वरीयता।

4. एकाउंटेंट – 1 : कम्प्यूटर पर एकाऊंट्स टैली की योग्यता प्राप्त अनुभवी एवं योग्य एकाऊंटेंट जो हिन्दी में भी कार्य करने में कुशल हो। अनुभवी एवं आर्य परिवार के सदस्य को वरीयता।

5. हिन्दी आशुलिपिक –1: शैक्षिक योग्यता : कम से कम इटरमीडिएट। टंकन एवं आशुलेखन का अच्छा अनुभव हो। कप्यूटर पर कार्य करने वाले एवं डीटीपी कार्य में अनुभवी आवेदन करें।

6. ड्राइवर – 1: वैध लाइसेंस तथा बैज वाले ऐसे उम्मीदवार जिन्हें दिल्ली के रूटों की जानकारी हो। आवास सुविधा प्रदान की जाएगी। अनुभवी उम्मीदवार को वरीयता दी जाएगी।

इच्छुक उम्मीदवार अपने बायोडाटा, एवं प्रमाण पत्रों की सत्यापित प्रतियों के साथ सहित शीघ्रातिशीघ्र उपरोक्त पते पर भेजें। – ***महामन्त्री, 9350204466***

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी का

रजत जयन्ती समारोह

1 फरवरी से 8 फरवरी, 2009

शोभायात्रा : 25 जनवरी प्रातः 9.30 बजे
सामवेद यज्ञ एवं भजन संध्या
1 फरवरी, 09 यज्ञ प्रातः 7–9बजे
भजन : सायं 6.30 से 9.30 बजे

पूर्णाहुति एवं रजत जयन्ती समारोह
8 फरवरी : प्रातः 8 से 1 बजे

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर पुण्य लाभ उठाएं।

– *कुलभूषण कुमार, प्रधान*
ललित चौधरी, मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर बिहार बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ प्राप्त हुए दान :-

73. श्री नत्थूराम	100
74. श्री वीर भान	51
75. श्री श्याम प्रकाश	100
76. श्री राजकुमार	100
77. श्री राजकुमार	50
78. श्री दयानन्द आर्य	100
79. श्री अमर सिंह आर्य	100
80. श्री सुधीर मित्तल	50
81. आर्यसमाज उत्तम नगर	501
82. श्री विद्या सागर	101

दान देने वाले महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्यसन्देश में भी प्रकाशित जाते रहेंगे। – विनय आर्य, महामन्त्री

जीवन प्रभात आश्रम पाडिचेरी निरीक्षण कर लौटे सभा अधिकारी

दिनांक 21 दिसम्बर, 2008 को सम्पन्न हुई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में निर्णय लिया गया था कि जीवन प्रभात आश्रम पाण्डिचेरी की गतिविधियों का निरीक्षण करने के लिए एवं एक समिति का गठन किया जाए, जिसमें सर्वश्री विक्रम नरुला (संयोजक), मदन मोहन सलूजा (सदस्य), रमेश चन्द्र (सदस्य), एवं श्री शिव कुमार मदान (सदस्य) थे।

इस समिति ने दिनांक 27 दिसम्बर से 2 जनवरी, 2009 के बीच उक्त आश्रम का निरीक्षण किया और अपनी रिपोर्ट सभा कार्यालय को सौंप दी है।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–2, नई दिल्ली
प्रधान : श्री वीरेन्द्र तलवार
मन्त्री : श्री प्रियव्रत
कोषाध्यक्ष : श्री एस. डी. नांगिया

आर्यसमाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर
प्रधान : श्री आदित्य प्रकाश गुप्ता
मन्त्री : श्री राजेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री अमित कुमार आर्य

आचार्य ज्ञानेश्वर जी का यू.ए.ई. में वेद प्रचार उनकी स्वयं की लेखनी से

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मॉरीशस से भाग लेकर मैं यहां पहुंचा। श्री राजेश लखाणी व श्रीमती रेशमा लखाणी के निमन्त्रण पर कुछ दिन का समय दे दिया। आज ही सिन्धी मेमोरियल सेन्टर में स्थित एक विशाल भवन को किराए पर लेकर प्रवचन का कार्यक्रम बनाया था। वैदिक जीवन पद्धति विषय को लेकर मैंने प्रवचन किया तत्पश्चात् आधे घंटे तक शंका समाधान विषय चला। श्रोताओं ने अच्छी रूचि ली। एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही ऐसा लगा तैसे किसी तपते हुए गर्म चैम्बर में प्रवेश किया हो। भयंकर लू चल रही थी और रेत उड़ रही थी। किन्तु समुद्र किनारे मीलों तक, ऊंची–ऊंची भव्य, विशालकाय, वैभवयुक्त सुन्दर चित्र–विचित्र आकर्षक 50–50 मंजिल तथा उससे भी ऊंची–ऊंची गगनचुम्बी इमारतों को देखकर आर्श्चय हो रहा था। एक भवन तो विश्व का सर्वाधिक ऊंचा लगभग 900 मीटर से अधिक का बन रहा था। लगभग 160 मंजिल तो बन चुकी है।

आबूधाबी, शारजाह, अजमान, दुबई आदि 7 राजओं का संयुक्त नाम यू.ए.ई. है, ये राजतन्त्र चलाते हैं, प्रजातन्त्र नहीं है।

यहां के शेख (राजा) ने विदेशी कम्पनियों को अपने प्रकार की छूट तथा सुविधाएं प्रदान की हैं, जिसके परिणाम स्वरूप विश्व के अनेक देशों की 38000 से भी अधिक कम्पनियां अपना उत्पादन, संयोजक, वितरण, व्यवसाय आदि कार्य कार्य करती हैं। परिणाम स्वरूप गल्फ के ये छोटे देश विश्व के विशेषकर यूरोप व एशिया के प्रमुख व्यवसायिक केन्द्र बन गए हैं।

ठंड से सिकुड़तों को ओढ़ाए कम्बल

"संसार का उपकार करना आर्यसमाज का उद्देश्य है।"

वेद एवं महर्षि दयानन्द के अनुसार चलते हुए जिला आर्य समाज के प्रधान श्री अर्जुन देव चढ्ढ़ा के नेतृत्व में आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने मध्य रात्रि में फलाइओवर के नीचे, कोठड़ी, गुमानमुपरा रोड, गुजराती समाज, गीता भवन, जयपुर गोल्डन, श्रीराम मन्दिर स्टेशन तक फटे–पुराने टाट, बोरियों, मोमजामे एवं चद्दर में ठंड से कांपते हुए 50 लोगों पर कम्बल ओढ़ाए। स्व0 श्रीमती शान्ति नागपाल की स्मृति में उनके परिवार की ओर से कम्बल उपलब्ध कराए गए थे।

– ***अरविन्द पाण्डेय, का. मन्त्री***

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज कैराना, जिला मुज्जफर नगर (उ.प्र.) को वैदिक सिद्धान्तों से सुपरिचित, कर्मकाण्ड में दक्ष, प्रवचन कला में प्रवीण, आर्यसमाज के प्रति निष्ठावान, सुयोग्य एवं विद्वान् धर्माचार्य की आवश्यकता है। वानप्रस्थी/ विवाहित एवं आर्य परिवार वाले को प्राथमिकता दी जाएगी।

सम्पर्क करें – ***मन्त्री, 9837773024***

शोक समाचार

श्री प्रवीण आर्य को पितृशोक

शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति के प्रमुख कार्यकर्ता एवं आर्यसमाज के सहयोगी श्री प्रवीण आर्य जी के पिता जी का गत दिनों निधन हो गया। उनकी स्मृति में रस्म पगड़ी 18 जनवरी, 09 को सम्पन्न हुई।

डॉ. ऊषा शास्त्री को पतिशोक

आर्यसमाज की सुप्रसिद्ध विदुषी श्रीमती डॉ. ऊषा शास्त्री के पतिदेव श्री जयदेव जी का शनिवार 10 जनवरी, 09 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से रविवार 11 जनवरी को हुआ। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, एक बेटा तथा एक बेटी छोड़ गए हैं। श्री जयदेव जी बहुत अच्छे विद्वान् थे। उनके निधन के समय ऊषा शास्त्री जी मॉरीशस में प्रचार कार्य पर गई हुई थीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष पर

केन्द्रीय कारागार तिहाड़ नई दिल्ली में पूर्णमासी यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 12 जनवरी, 09 को पौष पूर्णमासी पर केन्द्री कारागार संत्र 5 में आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली की ओर से आचार्य श्री ब्रह्मनारायण शास्त्री की देखरेख में यज्ञ सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज की प्रधान श्रीमती विद्यावती आर्या द्वारा मधुर भजन सुनाते हुए उपस्थित युवा बन्दियों को परिवार, समाज व राष्ट्र के सेवाहित कार्य करने हेतु अच्छे चरित्रवान नागरिक बनने की प्रेरणा दी। आचार्य ब्रह्म नारायण शस्त्री ने बन्दियों को अच्छा नागरिक बनने की सलाह देते हुए कहा कि हमारे विद्वान, ऋषि–महात्माओं के समतुल्य चरित्रवान बनने का निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। श्रीमती नीरु आर्य ने बन्दियों को पूर्व की गलतियों को भुलाकर अपने अन्दर छिपी हुई प्रतिभाओं को समकाने का निरन्तर प्रयास करने पर जोर दिया। बन्दी श्री सागर ने ओ३म् नमः शिवायः का भजन सुनाकर सबको भाव विभोर कर दिया।

आर्यसमाज सागरपुर के पूर्व प्रधान श्री जयसिंह वर्मा ने उपस्थित समस्त पदाधिकारियों का आभार प्रकट करते हुए बन्दियों को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से सर्वश्री कवंर सिंह, राकेश कुमार, हरि सिंह, अशोक कुमार गुप्ता, पन्ना लाल गुप्ता, श्रीमती कमलेश आर्य, श्रीमती प्रेवश आर्य, श्रीमती पुष्पादेवी, श्रीमती कृष्णा आदि उपस्थित थे। प्रसाद वितरण के साथ–साथ आर्यसमासज की ओर से कुछ पुस्तकें भी बन्दियों को वितरित की गई। *– आर्य ओ. पी. भटनागर, संयोजक यज्ञ समिति*

आर्यवीर दल हांसी का 19वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यवीर दल हांसी का 19वां वार्षिकोत्सव दिनांक 22 एवं 23 दिसम्बर को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लाल सड़क हांसी में आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रथम दिवस प्रातः यज्ञ के उपरान्त वैदिक चेतना यात्रा आतंकवाद विरोधी रैली के रूप में नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गई। तथा दोपहर बाद 3 बजे शास्त्री भवन में श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर आतंकी हमलों में हुए शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह आयोजित किया गया, जिसके मुख्य अतिथि स्वामी राजदास महाराज थे तथा मुख्य वक्ता महात्मा ओममुनि वानप्रस्थ थे।

मुख्य अतिथि स्वामी राजदास ने कहा कि हमारा इतिहास बलिदानी है हमें इन्हीं वीर रणबांकुरों, बलिदानियों की वजह से स्वाधीनता प्राप्त हुई है। आजादी की रक्षा करना हम सब का परम कर्त्तव्य है। इस अवसर पर अनेक स्कूली बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं भजन प्रवचन भी हुए।

मंच संचालन आचार्य रामसुफल शास्त्री ने किया।

– प्रैस सचिव, आर्यवीर दल हांसी

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवंडी का वार्षिकोत्सव एवं

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवंडी, जिला कोटा (राज.) का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 21 से 23 दिसम्बर, 08 तक किया गया। इस अवसर पर यज्ञ श्री वृद्धिचन्द आर्य एवं श्री क्षेत्रपाल आर्य द्वारा किया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य ने भजनों के माध्यम से ज्ञान की गंगा बहाई। आयोजन के क्रम में पण्डित भरत लाल शास्त्री के प्रवचन हुए।

– कुलदीप सुमन, उपमन्त्री

महर्षि दयानन्द मैट्रीमोनियल सर्विस

(विवाह सम्बन्ध)

आर्यसमाज, ए ब्लाक, कालकाजी, नई दिल्ली–19, दूरभाष : 011–26226176

समय – प्रतिदिन प्रातः 9.30 से 11.30 बजे तक – सोमवार अवकाश

कृपया इस सेवा का लाभ उठाएं

–: निवेदक :–

धर्मपाल सिब्बल, प्रधान	रामचन्द्र कपूर, संयोजक	रमेश गाड़ी, मन्त्री
9811912635	26446646	9868946644

125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में
आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

भाषण एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता

दिनांक : 26 जनवरी, 2009 दोपहर 1 बजे

स्थान : आर्यसमाज सी–3, जनकपुरी, नई दिल्ली–58

भाषण विषय : भारत के पुनरुत्थान में महर्षि दयानन्द सरस्वती का योगदान

वाद–विवाद विषय : क्या भारत आतंकवाद से लड़ने में सक्षम है?

भाषण में 17 वर्ष तक तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता में 24 वर्ष तक युवक भाग ले सकते हैं। दोनों प्रतियोगिताओं में प्रथम विजेताको 1100/–, द्वितीय को 501/– तथा तृतीय को 251/– रुपये के पुरस्कार दिए जाएंगे।

नियम :– प्रत्येक प्रतिभागी को केवल 3 मिनट का समय दिया जाएगा। निर्णायकों का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा। प्रत्येक प्रतियोगी को सफेद वस्त्र पहनना आवश्यक है। समय पर आने वाले प्रतियोगी ही भाग ले सकेंगे।

अधिक जानकारी के लिए प्रतियोगिता व्यवस्थापक श्री मधुसूदन आर्य 9990989855 पर सम्पर्क करें। कार्यक्रम के पश्चात् आर्यसमाज जनकपुरी सी–3 की ओर से जलपान होगा।

निवेदक :– *वीरेन्द्र आर्य, संचालक* *सुन्दर आर्य, महामन्त्री*

आर्यसमाज स्वाहेड़ी, बिजनौर का

27वां वार्षिकोत्सव

राष्ट्र कल्याण चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

दिनांक 2 से 9 फरवरी, 2009

यज्ञ–प्रवचन : प्रातः 7 से 10 बजे

सायं 3 से 6 बजे

ब्रह्मा : डॉ0 स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

यज्ञाचार्य : श्री अरविन्द शास्त्री योगी

समापन समारोह एवं पूर्णाहुति

9 फरवरी प्रातः 7 से 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ उठाएं। **आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था होगी।**

– डॉ. विद्यासागर आर्य, प्रधान
चौ. घसीटा सिंह, मन्त्री

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज अबोहर (पंजाब) को एक पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक अपने नाम, पता, सम्पर्क नम्बर, शैक्षिक योग्यता तथा अनुभव आदि के ब्यौरा देते हुए आवेदन भेजें। आवास, बिजली, पानी आदि की सुविधा आर्यसमाज की ओर से निःशुल्क दी जाएगी। दक्षिण योग्यतानुसार। सम्पर्क करें –

सोहनलाल सेतिया, प्रधान

WANTED

Medico/Professional Match for Delhi Based Senior Resident in Govt. Hospital (MBBS, DNB - Pathology) 162 cms / Nov. 1980, Fair Complexion T.T./ Vegetarian. Well Educated. Punjabi Arora Family.

Contact :- 09811763833, 95120-4318740,
Email : drusd5@gmail.com

हम मृत्यु से छूटें, अमृतत्व से नहीं

आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली में रविवार 4 जनवरी, 2009 को प्रवचन करते हुए उदयपुर निवासी आचार्य श्री शंकरलाल विद्यावाचस्पति ने 'त्र्यम्बकम यजामहे' मन्त्र के रहस्योद्घाटन का प्रयास किया। यजुर्वेद, ऋग्वेद और अथर्ववेद में आए इस मन्त्र के विभिन्न पाठों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह मन्त्र सामान्य जनता में महामृत्युंजय मन्त्र के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा कि मोक्ष प्राप्ति के लिए शरीर का बन्धन वैसे ही आवश्यक है जैसे कि पकने के लिए खरबूजे का डाल से जुड़ना। मुमुक्षे भी अपनी डाल अपने प्रभु से सदैव जुड़ा रहे, सदैव उसका स्मरण करे, उसके गुणों को धारण करे, तभी वह परिपाक को प्राप्त करेगा।

इस अवसर पर समाज के धर्माचार्य डॉ0 अरुणदेव शर्मा को माल्यार्पण, स्मृति चिह्न के साथ विदाई दी गई। यहां से वे बैंगलोर आर्यसमाज में चले गए हैं।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया, प्रधान

आर्यसमाज महरौनी का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज महरौनी, जिला ललितपुर (उ0प्र0) का प्रथम वार्षिकोत्सव 9 दिसम्बर, 08 को सम्पन्न हुआ। यज्ञ संस्थापक पं. पुरुषोत्तम नारायण दुबे आर्य ने कराया।

इस अवसर पर आर्यसमाज झांसी के प्रचार मन्त्री ने उपस्थित जन साधारण को आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के बारे में बताया। संस्थापक पं. पुरुषोत्तम नारायण ने मन्दिर निर्माण हेतु 40×70 वर्गफुट जमीन दान दी तथा आर्यसमाज झांसी ने 11 हजार रुपये का सहयोग प्रदान किया।

– इंजी. लखनपाल सेन, मन्त्री

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

19 जनवरी, 2009 से 25 जनवरी, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २२/२३-०१-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

श्री..

वैदिक संस्कृति की पहचान, परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् । तीन अक्षरी ओम् का स्टीकर मात्र 150/– रुपये सैंकड़ा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) में

साहित्य बिक्री विभाग प्रारम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001 में साहित्य बिक्री विभाग नियमित रूप से आरम्भ कर दिया गया है। यह विभाग प्रतिदिन दोपहर 12.00 से रात्रि 8.00 बजे तक नियमित खुलता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर तैयार की गई समस्त प्रचार सामग्री के अलावा और भी साहित्य एवं प्रचार सामग्री इस बिक्री विभाग में उपलब्ध हैं। यथा –

पटके, झण्डे, झण्डियां प्लास्टिक एवं कपड़े की, बैनर, बिल्ले, बैच, दैनिक सत्संग गुटका, महर्षि दयानन्द के विभिन्न आकारों में फोटोग्राफ, घड़ियां तथा अन्य सभी वैदिक साहित्य जो आर्यसमाज के प्रचार-प्रचार में उपयोगी हो, उपलब्ध है। आर्यसमाजें प्राप्त करने के लिए अपने आर्डर उपरोक्त पते पर भेज सकते हैं।

– व्यवस्थापक, बिक्री विभाग

आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली का

22वां वार्षिकोत्सव

23 जनवरी से 26 जनवरी, 09

सामवेद पारायण यज्ञ

ब्रह्मा : आचार्य यशपाल शास्त्री

प्रवचन : डॉ. महेश विद्यालंकार

भजन : पं. नरेश निर्मल

यज्ञ पूर्णाहुति : 26 जनवरी, 2009

आर्यजन भरी संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ उठाएं। – *सुरेन्द्र रैली, प्रधान*

कृष्ण कुमार ढींगरा, मन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर